गुप्तोत्तर कालीन अभिलेखों में श्रीलक्ष्मी प्रसंग

डॉ0 ज्योत्सना पाण्डेय

असिस्टेन्ट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास विभाग
ब्राइट कैरियर गर्ल्स डिग्री कालेज
लखनऊ (उ0प्र0)

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमो नमः।।

जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मी रूप में स्थित है, उनको नमस्कार है, उनको नमस्कार है, उनको बारम्बार नमस्कार है। श्रीलक्ष्मी को समृद्धि, सौभाग्य व सौन्दर्य का प्रतीक माना गया है। 'लक्ष्यति इति लक्ष्मी' अर्थात् लक्ष्मी वह है जो स्वयं को लक्षित करती है। 'लक्ष्मी सम्पत्ति शोभ्यो' अर्थात् लक्ष्मी शोभा तथा सम्पत्ति देने वाली है। प्राचीनकाल में श्रीलक्ष्मी का वर्णन व अंकन साहित्यिक ग्रंथों, सिक्कों, मूर्तियों, मुद्राओं के साथ ही साथ अभिलेखों में भी हुआ है।

गुप्तोत्तर

गुप्तोत्तर काल के अभिलेखों में भी श्री अथवा लक्ष्मी वर्णन मिलता है। आदित्यसेन के तिथिविहीन अपसढ़ अभिलेख, में, जो 1850 ई0 में बिहार के गया जिले से पन्द्रह मील दूर प्राप्त किया है, लक्ष्मी प्रसंग है। अभिलेख की भाषा संस्कृत तथा लिपि सातवीं शती के उत्तरार्द्ध की कुटिल अक्षरों वाली भारतीय ब्राह्मी है। परवर्ती गुप्त वंशीय नरेश आदित्यसेन के इस अभिलेख का उद्देश्य भगवान विष्णु का मंदिर बनवाये जाने का उल्लेख करना है। अभिलेख की चौथी पंक्ति में वर्णन आया है कि ''जो (हर्षगुप्त) उचित समय पर सरलतापूर्वक अवनत किए हुए दृढ़ धनुष से घोर बाण वर्षा करता था, जिसे पति के रूप वरणकर साक्षात लक्ष्मी उसके साथ रहती थी, जो लक्ष्मी के वासस्थान से परांगमुख एवं विमूढ़ (शत्रुओं) द्वारा अश्रुपूर्ण नेत्रों से देखा जाता था ....।'' दूसरी पंक्ति में भी वर्णन है कि ''जिसने राजाओं में चन्द्रमा के समान श्री ईशानवर्मा की सेना रूपी दुग्ध–समुद्र को, जो लक्ष्मी (राज्यलक्ष्मी) सम्प्राप्ति का हेतु थी...।''

इसी अभिलेख की सोलहवीं पंक्ति में लक्ष्मी के साथ सरस्वती का वर्णन मिलता है। प्रसंग है कि धन के संग्रह तथा दान में उत्कृष्ट लोगों में श्रेष्ठ लक्ष्मी सत्य तथा सरस्वती का कुलगृह एवं धर्म दृढ़ सेतु था। उन्नतीसवीं (29) पंक्ति में लक्ष्मी विष्णु के साथ वर्णित है। ''जब तक चन्द्रकला हर (शिव) के मस्तक पर तथा लक्ष्मी विष्णु के वक्षस्थल तथा सरस्वती ब्रह्मा के मुख में ... तब तक आदित्यसेन धवल कीर्ति प्रकाशित करते रहेगें...।''

मौखरि

मौखरि वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक ईशानवर्मा के हरहा अभिलेख (मालवा सं0 611) में लक्ष्मी वर्णन अनेक बार किया गया है। ईशानवर्मा का काल आर0सी0 मजूमदार ने 550

Scanned with CamScanner

से 576 ई0 के मध्य माना है। यह अभिलेख उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के हड़हा स्थल से प्राप्त किया गया है। इस अभिलेख की सत्रहवीं पंक्ति में लक्ष्मी तथा सरस्वती का वर्णन मिलता है।

उसमें उल्लेख आया है कि उसमें (यशोवर्मन) लक्ष्मी कीर्ति तथा सरस्वती आदि ईर्ष्यापूर्वक उसी भाँति निवास करती हैं, जिस प्रकार, रसिक प्रेमी के लिए प्रियांगनायें अत्यन्त अभिलाषा दिखाती है।

ईशानवर्मा के अभिलेखों में प्रायः लक्ष्मी वर्णन मिलता है, परंतु उपमा के अर्थ में। हरहा अभिलेख की अठारहवीं पंक्ति में भी लक्ष्मी लाक्षणिक अर्थ में प्रयुक्त हुई है, जिसमें वर्णन आया है कि ''जब तक प्रवृद्ध कलियुग अपने बल के द्वारा सदाचार को दबा लेता था, कामदेव अपने बाणों के द्वारा कान्ताओं के शरीर को घायल कर देता था, असमय भंग के डर से लक्ष्मी अन्य व्यक्तियों का आश्रय नहीं लेती थी उस समय तक विधाता ने उसके लोकप्रिय वपु का निर्माण नहीं किया था।''

मौर्यकालीन अभिलेखों में लक्ष्मी का संदर्भ श्री, शोभा, सौन्दर्य, कांति, सम्पन्नता, समृद्धि के रूप में हुआ है वहीं गुप्तोत्तर काल तक आते–आते लक्ष्मी लक्षणा व उपमा के संदर्भ में प्रयुक्त होने लगीं। स्पष्ट है कि लक्ष्मी का संदर्भ श्री, सम्पत्ति से अलग हटकर उन गुणों पर निर्भर हो गया जिनके त्याग से राजादि भी राज्यलक्ष्मी व धनलक्ष्मी से वंचित हो जाते हैं।

हरहा अभिलेख की उन्नीसवीं पंक्ति में भी लक्ष्मी का वर्णन मिलता है। यहाँ पर भी लक्ष्मी का उपमा के अर्थ में प्रयोग किया गया है। वर्णन आया है कि उसने (ईशानवर्मा) शत्रु–देश की कुच–ग्रहण के भय से भ्रमित नयन वाली लक्ष्मी की तलवार की ज्योति से सुशोभित अपनी बाहों के द्वारा अपने वक्षस्थल से उसी तरह आवेश पूर्वक लगा लिया था, जिस तरह चतुर प्रेमी भ्रमित लोचना कान्ताओं के मनोभाव को जानकर उनका प्रगाढ़ आलिंगन करता है जिससे वे अन्य व्यक्तियों के पास कामभाव से जाने की इच्छा का परित्याग कर दें।

वर्धन

हर्षवर्धन के बाँसखेड़ा दानपत्र (628 ई0) में भी लक्ष्मी प्रसंग आया है। यह अभिलेख उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले से पच्चीस मील दूर स्थित बांसखेड़ा ग्राम से प्राप्त हुआ है। अभिलेख की तेरहवीं पंक्ति में वर्णन आया है कि बिजली और जल के बुलबुले के समान चंचला लक्ष्मी का फल दान देना और दूसरों के यश की रक्षा करना है प्राणियों के लिये मन, वचन और कर्म से हित करना कर्तव्य है। धर्मार्जन का यह उत्तम (उपाय) हर्ष ने बताया है।

चालुक्य

बादामी के चालुक्य वंशीय पुलकेशी द्वितीय के ऐहोल अभिलेख जो 634–635 ई0 का है, में लक्ष्मी का वर्णन है। यह अभिलेख दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण अभिलेखों में से एक है। बीजापुर जिले के हुगुण्ड तालुके में ऐहोल नामक स्थान पर एक प्राचीन मंदिर में एक पाषाण खंड पर उत्कीर्ण है। चौदहवीं पंक्ति में 'लक्ष्म्या किलाभि' वर्णन है अर्थात् जो नहुष के समान प्रभावशाली तथा लक्ष्मी के द्वारा अभिलषित था। इक्कीसवीं पंक्ति में वर्णन है कि ''उस

Scanned with CamScanner

(पुलकेशी) ने पश्चिमी समुद्र की लक्ष्मी रूपा पुरी का मतवाले हाथियों के समूह रूपी सैकड़ों नावों से मर्दन किया.....।'' अभिलेख में यदा–कदा लक्ष्मी प्रसंग मिलता है।

पूर्व मध्यकालीन

पूर्व मध्यकालीन राजवंशों के अभिलेखों में लक्ष्मी प्रायः उपमा के सन्दर्भ में दिखाई देती है। धंगदेव का खजुराहो अभिलेख जो विक्रम संवत 1011 ई0 का है, खजुराहो, छतरपुर (म0प्र0) से प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख की भाषा संस्कृत तथा इसकी लिपि कुटिल देवनागरी है। अभिलेख की तीसरी पंक्ति में वर्णित है कि ''जिस पर संभ्रमपूर्वक चंचल, लक्ष्मी के कटाक्षपातों की शोभा पड़ी .....।'' उन्नीसवीं पंक्ति में लक्ष्मी तथा सरस्वती के साथ होने का वर्णन है, ''जहाँ लक्ष्मी सरस्वती के साथ, पराक्रम नीति से युक्त है .....।''

राजा भोज की ग्वालियर प्रशस्ति में लक्ष्मी वर्णन आया है कि ''अमृततुल्य अनन्य गति वाले वृद्धि को प्राप्त गुणों में रक्षित जिस लक्ष्मी ने धर्म (धर्मपाल) के पुत्र (देवपाल) का वरण कर लिया था, वही बाद में नीति से भोज की पुर्नभू हो गयी।'' यह अभिलेख सागरताल, ग्वालियर (म0प्र0) से मिला है जिसकी भाषा संस्कृत तथा लिपि उत्तर भारतीय ब्राह्मी है।

राष्ट्रकूट

राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष प्रथम का संजन ताम्रलेख में भी लक्ष्मी का यदा–कदा वर्णन मिलता है। संजन नामक स्थान से थाने जिले के महाराष्ट्र राज्य से प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख की तिथि शक संवत 793 (781 ई0) तथा भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है। इस अभिलेख की चौदहवीं पंक्ति में वर्णन आया है ''जिसने गंगा यमुना नदियों के मध्य गौड़ नरेश को नष्टकर उसके श्वेत छत्र तथा लक्ष्मी के लीला कमलों का हरण कर लिया।'' इक्कीसवीं पंक्ति में भी उल्लेख आया है कि ''अपनी नीतियों से राजाओं को वश में करते हुये स्वामिभक्त सामन्त समूह से युक्त राज्यलक्ष्मी का विस्तार करते हुए ....।''

पाल

पालवंशीय धर्मपालदेव के खालिमपुर ताम्रपत्र में श्रीलक्ष्मी लाक्षणिक अर्थ में प्रयुक्त हुई है। इसका प्राप्ति स्थान खालिमपुर जिला मालदा पश्चिमी बंगाल है, जिसकी तिथि नौवीं शती है तथा भाषा संस्कृत एवं लिपि उत्तर भारतीय लिपि का मगध प्रकार है। इस अभिलेख की पंचम पंक्ति में लक्ष्मी वर्णन उल्लिखित है ''जिस प्रकार चंद्र को रोहिणी, अग्नि को स्वाहा, शिव को शर्वाणि, कुबेर को भद्रा, इन्द्र को शची तथा विष्णु को लक्ष्मी उसी प्रकार राजा के लिए उसकी पत्नी आनंददायिनी हुई ....।'' दसवीं तथा सत्रहवीं पंक्ति में भी लक्ष्मी सांकेतिक अर्थ में वर्णित है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जहाँ मौर्यकालीन अभिलेखों में लक्ष्मी का संदर्भ श्री, शोभा, सौन्दर्य, कांति, सम्पन्नता, समृद्धि के रूप में हुआ है वहीं गुप्तोत्तर काल तक आते–आते लक्ष्मी लक्षणा व उपमा के संदर्भ में प्रयुक्त होने लगीं। स्पष्ट है कि लक्ष्मी का संदर्भ श्री, सम्पत्ति से अलग हटकर उन गुणों पर निर्भर हो गया जिनके त्याग से राजादि भी राज्यलक्ष्मी व धनलक्ष्मी से वंचित हो जाते हैं। ऐसे कार्यों पर जोर दिया गया जिनके करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं, एवं ऐसे कार्यों की अवहेलना की गयी जिनसे लक्ष्मी प्रस्थान कर जाती हैं ताकि राजा हो या

Scanned with CamScanner

मनुष्य नैतिकता के पथ पर ही चलें कभी अपने कर्तव्य मार्ग से च्युत ना हों। श्रीलक्ष्मी उन्हीं का वरण करती हैं जो वीर, साहसी, सच्चे, कर्तव्यनिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. श्रीराम गोयल–गुप्तकालीन अभिलेख इन्सक्रिप्शन मौखरि–पुष्यभूति–चालुक्य युगीन अभिलेख।
2. राजबली पाण्डेय–हिस्टोरिकल एण्ड लिटरेरी इन्सक्रिप्शन, वाराणसी, 1962।
3. जे0एफ0 फ्लीट–इन्सक्रिप्शन ऑफ दि अर्ली गुप्त किंग्स, लंदन, 1888।
4. वी0वी0 मिराशी– इन्सक्रिप्शन ऑफ दि अर्ली गुप्त किंग्स, भाग–1, उटकमण्ड, 1955।
5. जी0एस0पी0 मिश्र– भारतीय अभिलेख संग्रह, खंड–3, जयपुर, 1974।
6. एच0के0 शास्त्री–साउथ इंडियन इन्सक्रिप्शन भाग–2, मद्रास, 1924–26।
7. डी0सी0 सरकार– सेलेक्ट इन्सक्रिप्शन विअरिंग ऑन इण्डियन हिस्ट्री एण्ड सिविलाइजेशन, कलकत्ता, 1965।

Scanned with CamScanner